प्रेरणा का स्कूल

जब किस्सागो शिवनारायण सिंह किस्सा सुना रहे होते हैं तब पूरे विद्यालय में एक परिवार का वातावरण उपस्थित होता है। प्रार्थना के पश्चात जब वे वेद, उपनिषद पुराण और आधुनिक विज्ञान के उद्धरण प्रस्तुत कर धारा प्रवाह बोलते हैं तो लगता है ऋषि कुल की परम्परा जीवन्त हो चुकी है। गुरु और शिष्य के बीच स्थापित तादात्म्य प्रतिदिन नवीनतम संभावनाओं को जन्म देता है। यहीं यह बात सच होती प्रतीत होती है शिक्षा असीम संभावनाओं को जन्म देती है। शिक्षा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है, शिक्षा मानवता के नए आयाम स्थापित करती है। ऐसे उद्बोधन कथाओं और प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व रूपान्तरण का प्रयास करते हैं प्रधानाचार्य शिवनारायण सिंह। शिवनारायण सिंह ने उद्बोधन कथाओं के माध्यम से प्रेस्टिज ट्यूटोरियल इण्टरमीडिएट कोई मूढ़मति कालिदास बन जाता है। अपने उद्बोधन कथाओं के माध्यम से शिवनारायण सिंह ने प्राचीन भारतीय गुरुकुल की परम्परा में विकसित मूल्यों के संरक्षण और संवर्द्धन का सराहनीय प्रयास किया है तो दूसरी ओर तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि के विकास के लिए प्रोत्साहन भी। आलोचक डॉ. अरविन्द त्रिपाठी के साथ एक साक्षात्कार में उनका

जहां मानवता अपनी पूर्णता को प्राप्त कर सके। यही चिन्ता अल्पभाषी शिवनारायण सिंह को एक किस्सागो बना देती है, वाचाल बना देती है। वे लिखते नहीं, बल्कि मुखर रूप से सोचते हैं। प्रार्थना सभा में अपने विद्यालय के छात्रों के समक्ष और उसे ही टेप करके पुस्तकाकार रूप दे दिया जाता है। विश्व पुस्तक मेलों में उनके किताबों की अच्छी बिक्री ने उन्हें चर्चा के नए क्षितिज मुहैया कराए तो अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखन मंच के वर्ष 2009 के 'सरस्वती रत्न सम्मान' से त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली के सभागार में पूर्व राज्यपाल व केन्द्रीय मंत्री डॉ. भीष्म नारायण सिंह सम्मानित कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त राज्य भाषा पीठ द्वारा इलाहाबाद में साहित्य सृजन के लिए भी वे सम्मानित हो चुके हैं। फैडरेशन ऑफ पब्लिक स्कूल दिल्ली द्वारा मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के माध्यम से

शिवनारायण सिंह ने उद्बोधन कथाओं के माध्यम से प्रेस्टिज ट्यूटोरियल इंटरमीडिएट कॉलेज देवरिया के वातावरण को एक परिवार के वातावरण में ढालने का प्रयास किया है, जहां छात्रों को सीखने और संस्कारित होने के लिए परिवार जैसा अपनत्व भरा वातावरण मिल सके।

कॉलेज देवरिया के वातावरण को एक परिवार के वातावरण में ढालने का प्रयास किया है, जहां छात्रों को सीखने और संस्कारित होने के लिए परिवार जैसा अपनत्व भरा वातारण मिल सके। शिक्षा की हमारी संस्थानिक व्यवस्था जहां एक निश्चित पाठ्यक्रम की तैयारी करा कर सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण कराती है वहीं शिवनारायण सिंह ने लीक से हटकर छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए अभिनव प्रयोग का प्रयास किया है। वे स्वयं में एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि कैसे एक संस्थानिक व्यवस्था में रहते हुए भी छात्रों के बौद्धिक और नैतिक स्तरोनयन के लिए द्वार खोले जा सकते हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर मैकाले की शिक्षा व्यवस्था जो दुर्भाग्य से आज भी लागू है, ने ऐसे समाज की रचना की है जिसमें नैतिक मूल्यों का तीव्र गति से ह्रास हुआ है और पूरा का पूरा समाज भ्रष्टाचार के कैंसर से ग्रुण हो चुका है तब अपने उद्बोधन कथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित कर जाने अनजाने में वे उनके भीतर सोई ग्रंथियों को जगाने का काम करते हैं जिनके जागरण से अनेकशः संभावनाओं का जन्म होता है। अंगुलिमाल जैसा हिंसक व्यक्ति भी बुद्ध के रास्ते पर चल पड़ता है तो कहना है, 'जब मै बहुत छोटी कक्षाओं में पढ़ता था, रात में अपने बाबा के साथ दरवाजे पर खुले आकाश के नीचे सोता। उन दिनों मेरे बाबा मुझे सोने से पहले जरुर कोई न कोई किस्सा सुनाते और सुनते-सुनते न जाने कब मै सो जाता, सुबह जागने पर वे बातें मेरे मन में ठीक वैसी ही रहती जैसी वे सुनाते। कहा जा सकता है साहित्य और परम्परा का इतिहास कई मायने में अपने को दोहराता है। सच मानिए मैंने जानबूझकर या सायास वाचिक परम्परा को नहीं अपनाया है, बल्कि उसी अदृश्य प्रेरणा ने विद्यार्थियों के समक्ष प्रार्थना सभा में खड़े होते ही मुझे कुछ कहने के लिए उद्वेलित किया है जिसका परिणाम आपके सामने है। जीवन में अनुभव के ऐसे बिन्दुओं को भी उन्होंने प्रकाश में लाया है कि बच्चे ही नहीं बड़े भी एक बार सोचने के लिए बाध्य हो जाते हैं। उनकी उद्बोधन कथाएं विद्यार्थियों को कुछ सोचने-समझने के लिए अभिप्रेरित करती हैं तो जीवन में कुछ कर गुजरने की प्रेरणा भी। वे अपने छात्रों में समाज और पर्यावरण के प्रति दायित्व बोध कराते हैं तो विश्व व्यवस्था में उपजी चुनौतियों के प्रति सतर्क भी। उनकी चिन्ता नई वैश्विक परिस्थिति में ऐसे नागरिक के निर्माण की है जिसमें मनुष्यता की सभी संभावनाएं एक साथ पुष्पित पल्लवित हो सकें टीचर्स अवार्ड मिल चुका है। उनकी बढ़ती लोकप्रियता के प्रमाण हैं देश के विभिन्न संस्थानों में उनके द्वारा दिए गए व्याख्यान। राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमेट) इलाहाबाद, इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एक्सीलेंस एंड मैनेजमेण्ट गाजियाबाद व उत्तर प्रदेश गन्ना संस्थान लखनऊ के अतिरिक्त विभिन्न संस्थानों में उनके व्याख्यान हो चुके हैं जिनका संकलन मेरे प्रिय, जागो, पहले ही बहुत देर हो चुकी है! शीघ्र प्रकाश्य है। आरण्यक ओर हितोपदेश की कथाओं को आज भी आदर्श और महत्वपूर्ण मानने वाले शिवनारायण सिंह स्वयं को उस परम्परा का पोषक मानते हैं उनका कहना है, 'मेरा काम समकालीन कथा लेखन जैसा नहीं है, इसलिए किसी कथा लेखक से मेरे प्रभावित होने का कोई प्रश्न ही नहीं है। हां मेरे संज्ञान में आने वाली छोटी-बड़ी घटनाएं और प्रेरणादायक चरित्र अवश्य मुझे प्रभावित करते हैं क्योंकि अन्ततः वे ही किस्से के विषय बनते हैं।' यह सब बातें कुल मिलाकर उन्हें लीक से हटकर शिक्षा की दुनिया में एक नई राह बनाने वाला प्रयोक्ता बनाती है, जो मानवता के भविष्य के प्रति आशान्वित है। जिनकी आंखों में एक नए भारत का सपना है।

❋ ❋ ❋